भारतेंदु हरिश्चंद्र ने मातृभाषा सम्बन्धी दोहों में मातृभाषा के महत्त्व को किस रूप में प्रस्तुत किया है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

4. भारतेंदु कृत 'अंधेर नगरी' नाटक के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक की मूल संवेदना लिखिए।

5. 'दिल्ली दरबार दर्पण' निबंध में भारतेंदु की राष्ट्रीय भावना और स्वदेश-प्रेम किस प्रकार प्रकट हुआ है? तर्क संगत उत्तर दीजिए। (15)

अथवा

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' निबंध में भारत की उन्नति के लिए कौन-कौन से उपाय सुझाए हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :- (7×2=14)

(क) भारतेंदुयुगीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

(ख) 'गंगा वर्णन' कविता का सार

(ग) 'सत्य हरिश्चन्द्र' का चरित्र-चित्रण

(घ) 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन' की भाषा-शैली

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 10051 **K**

Unique Paper Code : 2053100017

Name of the Paper : भारतेंदु हरिश्चन्द्र

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×2=16)

(क) सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहूँ न कीजै बास।।
कोकिल बायस एक सम, पंडित मूरख एक्।
इंद्रायन' दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक।।
बसिये ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय।
रहिये तो दुःख पाइये, प्रान दीजिये रोय।।

अथवा

और इन गुणों पर ईश्वर की निश्चल भक्ति उसमें ऐसी है जो सब का भूषण है. क्ध्योंकि उसके बिना किसी की शोभा नहीं। फिर इन सब बातों पर विशेषता यह है कि राज्य का प्रबन्ध ऐसा उत्तम और दृढ़ है कि लोगों को सन्देह होता है कि इन्हें राज काज देखने की छुट्टी कक मिलती है? सच हैं छोटे जी के लोग थोड़े ही कामों में ऐसे घबड़ा जाते हैं मानों सारे संसार का बोझ उन्हीं पर है, पर जो बड़े लोग हैं उनके सब काम महारम्भ होते हैं, तब भी उनके मुख पर कहीं से व्याकुलता नहीं झलकती, क्योंकि एक तो उनके उदारचित्त में धैर्य और अवकाश वहुत है, दूसरे उनमें समय व्यर्थ नहीं जाते और ऐसे यथायोग्य बाँटे रहते हैं जिससे उन पर कभी भीड़ पड़ती ही नहीं।

(ख) बहुत लोग यह कहेंगे कि हमको पेट के धंधे के मारे छुट्टी ही नहीं रहती बाबा, हम क्या उन्नति करें? तुम्हारा पेट भरा है तुमको दून की सूझती है। यह कहना उनका बहुत भूल है। इंगलैंड का पेट भी कभी यों ही खाली था। उसने एक हाथ से अपना पेट भरा, दूसरे हाथ से उन्नति की राह के काँटों को साफ किया। क्या इंगलैंड में किसान, खेतवाले, गाड़ीवान, मजदूरे, कोचवान आदि नहीं हैं? किसी देश में भी सभी पेट भरे हुए नहीं होते। किंतु वे लोग जहाँ खेत जोतते बोते हैं वहीं उसके साथ यह भी सोचते हैं कि ऐसी और कोन नई कल या मसाला बनायें जिसमें इस खेती में आगे से दूना अन्न उपजे। विलायत में गाड़ी के कोचवान भी अखबार पढ़ते हैं।

अथवा

कल साँझ को चिराग जले रेल पर सवार हुए, यह गए, वह गए। राह में स्टेशनों पर बड़ी भीड़ न जाने क्यों? और मजा यह कि पानी कहीं नहीं मिलता था। यह कंपनी यजीद के खानदान की मालूम होती है कि ईमानदारों को पानी तक नहीं देती। या सिप्रस का टापू सरकार के हाथ आने से और शाम में सरकार कां बंदोबस्त होने से यह भी शामत का मारा शामी तरीका अखतियार किया गया है कि शाम तक किसी को पानी न मिले। स्टेशन के नौकरों से फर्याद करो तो कहते हैं कि डॉक पहुँचावें, रोशनी दिखलायें कि पानी दें। खैर, ज्यों त्यों कर अयोध्या पहुँचे। इतना ही धन्य माना कि श्री राम-नवमी की रात अयोध्या में कटी। भीड़ बहुत ही है, मेला दरिद्र और मैले लोगों का। यहाँ के लोग बड़े ही कङ्गाल टिर्रे हैं।

2. भारतेंदु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में निहित देशभक्ति और सामाजिक सुधार की भावना का विस्तार से विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

भारतेंदु युगीन पृष्ठभूमि का विवेचन करते हुए बताइए कि इन परिस्थितियों ने भारतेंदु युगीन साहित्य को किस प्रकार प्रभावित किया?

3. संपादक के रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व की विशेषताएं बताएं। (15)

अथवा